आधुनिक समीक्षा और आई.ए.रिचर्ड्स

डॉ. गजेन्द्र मोहन,
सह आचार्य – हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय,नसीराबाद (अजमेर).

आधुनिक समीक्षा के क्षेत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्री आई.ए रिचर्ड्स का नाम अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है। इंग्लैंड में सन 1893 में इनका जन्म हुआ तथा सन 1924 से 1936 के मध्य इनका रचनाकाल माना जाता है। वर्तमान यूरोपीय अथवा पाश्चात्य काव्यशास्त्र में रिचर्ड्स का योगदान परिणाम और गुणवत्ता दोनों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है । रिचर्ड्स मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र के प्रखर विद्वान थे । इनका अनुभव क्षेत्र भी पूर्णतः विकसित था। वे लंबे समय तक हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहे । यहीं से उन्होंने डी.लिट की उपाधि पूर्ण की। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ ' प्रिंसिपल ऑफ लिटरेसी क्रिटिसिज्म' सबसे अधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

यदि रिचर्ड्स के सैद्धांतिक दृष्टिकोण पर दृष्टिपात करें तो पता चलता है कि उस काल के पाश्चात्य जगत में साहित्य समीक्षा के अनेक सिद्धांत प्रचलित थे। क्रोचे उनसे पूर्व ही नवीन वैज्ञानिक उपलब्धियों के आधार पर अभिव्यंजनावाद को स्थापित कर चुके थे। फ्रायड, युंग, सिगमंड और एडलर ने मनोविश्लेषण का समर्थन किया। अर्नाल्ड ने यह घोषणा की कि "धर्म और संस्कृति के इस संक्रांति काल में कविता ही मनुष्य का उद्धार कर सकती है।"1 इस प्रकार इस संक्रांति काल में वैज्ञानिक उन्नति एवं भौतिक समृद्धि के संदर्भ में कविता का अवमूल्यन होने लगा तब रिचर्ड्स मनोविज्ञान के क्षेत्र से साहित्य के क्षेत्र की तरफ आए और मनोविज्ञान का आधार लेकर उन्होंने अपने काव्य सिद्धांत का उल्लेख किया । इस प्रकार उन्होंने दो प्रमुख सिद्धांत दिए कला का मूल्यवादी या उपयोगितावादी सिद्धांत और संप्रेषणीयता का सिद्धांत । इनके अलावा साहित्य और विज्ञान, सफल काव्य के गुण भेद,काव्य और कला समीक्षा सिद्धांत, कला पक्ष का विवेचन, कला और नैतिकता आदि विषयों पर भी उन्होंने गहन चिंतन किया।

मूल्य के सिद्धांत पर नजर डालें तो पता चलता है कि रिचर्डस से पहले प्रोफेसर ब्रेडले ने काव्य में सौंदर्यानुभूति का समर्थन किया और उसे जीवन से अलग माना । रिचर्ड्स ने इसका खंडन करते हुए कला काव्य का जीवन मूल्य से घनिष्ठ संबंध स्वीकार किया । उनके अनुसार " मूल्यांकन संबंधी धारणाओं का संबंध मानसिक उद्देश्यों से है इनके दो रूप है प्रवृत्ति मूलक जिसके अंतर्गत भूख तृष्णा और वासना आती हैं और निवृत्ति मूलक जिसके अंतर्गत घृणा, निर्वेद, वितृष्णा आदि को रखा जा सकता है।"2 रिचर्ड्स ने कला को साधारण मूल्य का सिद्धांत कहा है। वे मूल्यवादी समीक्षक माने जाते थे ।उन्होंने ' कला कला के लिए सिद्धांत' का विरोध किया। वे श्रेष्ठ कला की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि " यदि वह मानव सुख की अभिवृद्धि में निरत हो, पीढ़ियों के उद्धार या हमारी पारस्परिक सहानुभूति के विस्तार में संलग्न हो अथवा हमारे अपने विषय में या हमारे या वस्तु जगत के परस्पर संबंध के विषय में ऐसे नूतन या पुरातन सत्य का आख्यान करे जिससे उक्त भूमि पर हमारी स्थिति और सुधार हो तो वह महान कला होगी।"3 चिंतनता की व्यापकता के कारण ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने आई ए रिचर्ड्स के इस सिद्धांत का पूरी तरह से समर्थन किया है।

प्रभाव मूल्य की दृष्टि से रिचर्ड्स के अनुसार " वे प्रवृत्तियां जो किसी अनुभव या मानसिक क्रिया द्वारा उत्पन्न की जाती हैं वही मूल्यवान हैं । इस प्रकार किसी अनुभव का मूल्य उसके उत्तरकालीन प्रभाव द्वारा आंका जाता है। इस प्रकार की कविता श्रोता या पाठक के मन को जितना अधिक प्रभावित कर सकती है वह उतनी ही उत्कृष्ट कहलाएगी।"4

काव्य और नैतिकता की चर्चा करते हुए रिचर्ड्स ने ब्रेडले के ' कविता कविता के लिए' सिद्धांत का खंडन करते हुए कला और नीति का परस्पर संबंध स्वीकार किया है। 5 इस संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रिचर्ड्स की अवधारणा में समानता यह है कि दोनों का मत है कि साहित्य मन को विशेषीकृत और परिष्कृत करता है । रिचर्ड्स रूढ़ नैतिकता के पक्षधर बिल्कुल नहीं थे इसलिए उन्होंने काव्य का आचार विचार से संबंध नहीं माना है।

प्रेषणीयता के सिद्धांत के संबंध में कहा जाए तो किसी अन्य की अनुभूति को अनुभव करना ही प्रेषणीयता है। इसे बहुत कुछ संवेदनशीलता भी माना जा सकता है। आई ए रिचर्ड्स के अनुसार " जब किसी वातावरण विशेष से एक व्यक्ति का मानस प्रभावित होता है तथा दूसरा उस व्यक्ति की क्रिया के प्रभाव से ऐसी अनुभूति प्राप्त करता है कि जो पहले व्यक्ति की अनुभूति के समान होती है तो उसे प्रेषणीयता कहते हैं।"6 एक की अनुभूति को अन्य सभी की अनुभूति बना देना ही कवि का कौशल है और उसे सब तक पहुंचा देना कलाकृति का सर्वश्रेष्ठ गुण है। अतः कला की प्रेषणीयता अत्यंत आवश्यक है। रिचर्ड्स का कहना है की समीक्षा का विशेष संबंध काव्य की संप्रेषणीयता से रहता है।

संप्रेषण और भाषा विषयक उनके विचार में प्रेषणीयता का माध्यम स्पष्ट रूप से भाषा ही है। भाषा भाव का अर्थ प्रस्तुत करती है । आई ए रिचर्ड्स अर्थ और भाव के संबंध में तीन रूप मानते हैं प्रथम जहां अर्थ ही भाव का बोधक होता है , द्वितीय जहां अर्थ ही भाव की अनुभूति का सूचक होता है तथा तृतीय जहां प्रसंग विशेष के कारण ही अर्थ विभिन्न भावों का सूचक बन जाता है ।

संप्रेषण कला का अर्थ के प्रति उनका मत है कि " भाव प्रकाशन की लालसा मानव की स्वाभाविक एवं प्राचीन वृत्ति है। सामाजिक प्राणी होने के कारण संप्रेषण मानव का आदिम क्रिया व्यापार रहा है, क्योंकि प्रत्येक अनुभूति संप्रेषण चाहती है। कला में संप्रेषण का अधिक महत्व है क्योंकि संप्रेषणीयता कला का स्वाभाविक धर्म माना जाता है। अतः कलाकार में भाव प्रकाशन की क्षमता के साथ-साथ प्रेषणीयता का गुण होना भी आवश्यक है ।"7

संप्रेषण की आदर्श स्थिति के संबंध में उनका मानना है कि संप्रेषण कवि और पाठक दोनों की अनुभूतियों के मध्य तादात्म्य और एकरूपता स्थापित होने पर ही होता है। यह एकरूपता जितनी अधिक होगी संप्रेषण भी उतना ही आदर्श होगा क्योंकि यह एकरूपता नितांत आवश्यक है। रिचर्ड्स के अनुसार " संप्रेषण का आदर्श रूप एकरूपता ही है दूसरी कोई स्थिति इसके समकक्ष नहीं हो सकती है।"8

रिचर्ड्स ने प्रेषणीयता के कुछ आधार माने हैं।रिचर्ड्स के अनुसार संप्रेषण कला का स्वाभाविक धर्म है, अतः कवि अपनी अनुभूतियों का सहज प्रस्तुतीकरण करके पाठक अथवा श्रोता के हृदय में अनुकूल भावदशा की सृष्टि करता है। श्रोता अथवा पाठक में संवेदनशीलता अथवा ग्रहणशीलता का गुण होना चाहिए। विषय रोचक और रमणीय रहेगा तो संप्रेषणीयता का गुण भी बहुत अधिक होगा। रचनाकार या कवि की अनुभूति का एकरस होना भी आवश्यक है । अनुभूतियों को विविधतापूर्ण, विस्तृत और मूल्यवान होना आवश्यक है तथा उनका उत्तेजक कर्म द्वारा उत्पन्न किए जाने योग्य होना भी अत्यंत आवश्यक है ।

रिचर्ड्स ने प्रेषणीयता के बाधक तत्वों का भी उल्लेख करते हुए चर्चा की है कि " मूल्यहीन अनुभूति का संप्रेषण यदि किसी मूल्यहीन संप्रेषण को प्राप्त होता है तो वह अभिव्यक्ति अपने आप में स्वतः ही दोषपूर्ण मानी जाती है। मूल्यवान अनुभूति का संप्रेषण यदि दोषपूर्ण होता है तो यह स्थिति भी दोषपूर्ण है। रिचर्ड्स ने काव्य के दो भेद बताए हैं अपवर्ती कविता और अंतर्वेदी कविता । सफल काव्य गुण के संबंध में अपनी बात कहते हुए रिचर्ड्स कहते हैं कि काव्य के सफल प्रणयन में दो गुण सहायक होते हैं - कलाकार की अनुभूति तथा कल्पना ।

अर्थ मीमांसा संबंधी विचार में रिचर्ड्स के अनुसार अर्थ के तीन प्रकार होते हैं। वाच्यार्थ जिसे वस्तु स्थिति से परिचित कराने वाली शब्द शक्ति कहा जाता है । अनुभूति जिसका तात्पर्य भावना से

होता है । स्वर जिसे कथन भंगिमा के रूप में माना जा सकता है या जिसे हम काकू वक्रोक्ति भी कह सकते हैं।

रिचर्ड्स के भाषा संबंधी विचार में रिचर्ड्स ने दो प्रकार के भाषा संबंधी प्रयोगों की चर्चा की है- एक वैज्ञानिक प्रयोग जब किसी संदर्भ विशेष के लिए वक्तव्य दिया जाता है वह चाहे सत्य हो या मिथ्या हो इस सूचनात्मक तथ्यात्मक अथवा अभिधात्मक भाषा प्रयोग भी कह सकते हैं क्योंकि विज्ञान की भाषा आध्यात्मिक होती है। वहां घोड़े का अर्थ चार पैरों वाला पशु विशेष ही है। रागात्मक अर्थ तथा भाषा का प्रयोग मनोवैज्ञानिक तथा दृष्टिकोण को प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है । काव्य में रागात्मक या भावात्मक प्रयोग ही प्रभावी और महत्वपूर्ण होता है। इसमें पदार्थ का उल्लेख मात्र सृजनात्मक न होकर पाठक के मन में अभिप्रेत भावों को आहत करने के लिए होता है। रिचर्ड्स काव्य में छंद और लय का होना आवश्यक और अनिवार्य मानते हैं ।

भारतीय चिंतन में सत्यम शिवम सुंदरम की कल्पना भी की गई है । जर्मन विचारक कांट ने " सत्य को औपचारिक बुद्धि, सुंदर को भावात्मक मनोवृति एवं शिव को क्रियात्मक मनोवृति माना है।"9 रिचर्ड्स ने सत्य का संबंध विचार से और शिव का संबंध इच्छा से माना परंतु सुंदर का संबंध भाव से नहीं माना है। रिचर्ड्स मनोवैज्ञानिक थे इसलिए उन्होंने सौंदर्य अनुभूति को साधारण इंद्रिय अनुभव माना है।उनके अनुसार " श्रोता या पाठक की काव्यपाठ जनित यह अनुभूति नए वस्त्र धारण करने के समान ही होती है।"10

निष्कर्षतः बीसवीं सदी के समीक्षकों में रिचर्ड्स का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है । यद्यपि उनके प्रतिपादन शैली, तात्विक अभिव्यंजना और चिंतन परंपरा अत्यंत क्लिष्ट है फिर भी आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों में उनका योगदान विशिष्ट माना जाता है। ठोस वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक ,सामाजिक तथा नैतिक दृष्टि का आधार ग्रहण करने के कारण उनके काव्य सिद्धांत आधुनिक पाश्चात्य कला समीक्षकों से लेकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल तक सभी को प्रभावित करने में सफल रहे हैं ।आलोचना के क्षेत्र में इनकी मान्यताएं सर्वथा मान्य हैं तथा साथ ही मनोवैज्ञानिकों से संबंधित उनकी व्याख्या मौलिक एवं चिंतन प्रधान भी है

संदर्भ

1. कल्चर एंड एनार्की, मैथ्यू अर्नाल्ड, पृष्ठ 128
2. द फाउंडेशन ऑफ एसथेटिक्स, आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 25
3. मीनिंग ऑफ मीनिंग, आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 149
4. प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म ,आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 192
5. प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म ,आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 102
6. प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म ,आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 170
7. साइन्स एंड पोयट्री , आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 24
8. प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म ,आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 69
9. कांट्स मॉरल फिलासफी , जॉनसन रॉबर्ट, पृष्ठ 89
10. प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म, आई ए रिचर्ड्स, पृष्ठ 169

Copyright © 2015 . Dr. Gajendra Mohan. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.